शिष्यता के अनिवार्य तत्व

अनिवार्य शिक्षाएं

मसीही जीवन व सांसारिक दृष्टिकोण

अध्याय 4 : पवित्र आत्मा के कार्य

हमारा यीशु मसीह के लिए जीवन जीना शुरू करने के बाद पुनः पुरानी आदतों में गिर जाना बहुत सहज बात है, विशेष कर तब, जब हम अपनी ताकत से अपने पापमय स्वभाव पर विजय प्राप्त करने की कोशिश कर रहे हों। हमें यह स्मरण करने व समझने की ज़रूरत है कि हमें अपने जीवन, हृदय व मन को बदलने के लिए परमेश्वर पर निर्भर होने की ज़रूरत है।

इस अध्याय में हम सीखेंगे कि केवल पवित्र आत्मा की सहायता से ही हम सच में परमेश्वर द्वारा नियोजित जीवन यापन कर सकते हैं। पवित्र आत्मा के बारे में अधिक जानकारी व कैसे हमारे जीवन पर आत्मा का प्रभाव पड़ सकता है जानने के लिए आगे पढ़ें।

मनुष्य होने के कारण हम परमेश्वर की समानता में नहीं पहुँच सकते–इसलिए हमें परमेश्वर की शक्ति अर्थात हमारे भीतर वास करने वाले पवित्र आत्मा की सहायता लेनी चाहिए।

पवित्र आत्मा त्रिएकत्व का एक व्यक्तित्व है। वह कोई अलग वस्तु नहीं बल्कि हमारे भीतर एक सलाहकार और मार्ग दर्शक के रूप में रहने वाला स्वयं परमेश्वर है। पवित्र आत्मा हमारे भीतर हमारे भले कामों के कारण नहीं बल्कि, यीशु के साथ जुड़े रहने के कारण वास करता है।

करते हैं। हो सकता है कि हमारे परिवार व मित्रों में से कोई भी मसीह पर विश्वास करने वाला नहीं हों, हो सकता है हम पर सताव हो रहा हों, हो सकता है हम अपने विश्वास में कमज़ोर महसूस कर रहे हों। हो सकता है कि हम अत्यधिक पापों में लिप्त हों और हम से वह बुरी आदतें छूट न रही हों। हो सकता है हम अपने जीवन के कुछ क्षेत्रों को बदलना चाहते हों, मगर हमसे ऐसा नहीं हो पा रहा हों। हो सकता है हम सोचने लगे हों कि शायद परमेश्वर के अनुसार जीवन बिताना हमारे बस से बाहर है, यह परमेश्वर की निगाहों में घृणित काम है या परमेश्वर हमारे जीवन से बहुत दूर व हमारे जीवन का भाग नहीं है।

परमेश्वर जानते थे कि ऐसा होगा; वह जानते थे कि हम सिद्ध नहीं हैं, वह जानते थे कि हम अकेले मसीही जीवन व्यतीत नहीं कर सकते, इस कारण उसने हमारे लिए एक सहायक को भेजा : "परन्तु सहायक अर्थात पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैंने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा" (यूहन्ना 14:6)। पवित्र आत्मा निश्चय ही हमसे बढ़कर व शक्तिशाली है। जर्कयाह 4:6 में लिखा है, "सेनाओं का यहोवा यों कहता है, न तो जल से, न शक्ति से, परन्तु परमेश्वर की आत्मा के द्वारा।" इसका अर्थ है कि यह हमारा कार्य नहीं है – हम अपनी पर्याप्तता व पापों को पवित्र आत्मा के हाथों में समर्पित कर सकते हैं, जो हमारे में कार्य करने हेतु सामर्थी है। क्या यह अद्‌भुत ख़बर नहीं है। जिस परमेश्वर ने सारी सृष्टि को रचा और जो इसे सम्भालता है, वह हमारी ओर से कार्य करता है व हर रोज़ हमें मसीह के समान बनाता है।

हो सकता है आप सोच रहे हों – कैसे मैं इन बदलावों को करने का अधिकार प्रदान कर सकता हूँ? पवित्र आत्मा के हाथों में अपना शरीर सौंपने से पहले, पवित्र आत्मा के बारे में भली भाँति जानना, तथा उसके कामों व प्रभाव को अधिक से अधिक अपने जीवन में होने देने के लिए इच्छुक होना ज़रूरी है।

हमें अपने जीवन में आत्मा के प्रभाव को बढ़ाने की ज़रूरत है। इसके अर्न्तगत वचन पढ़ने के लिए समय अलग करना व प्रार्थना करना शामिल है।

आईये कुछ समय मनन् करें कि पवित्र आत्मा कौन है। पवित्र आत्मा अनोखा व्यक्ति और परमेश्वर व त्रिएकता का एक भाग है। वह कोई अपरिभाषित शक्ति नहीं है, बल्कि उसमें कुछ चारित्रिक गुण, विशेषताएं, इच्छाएं तथा परमेश्वर के समान शक्ति है। बाइबल बताती है कि पवित्र आत्मा हमारी कई तरह से सहायता करता है। जैसा कि रोमियों 8:26 में लिखा है, "इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है : क्योंकि हम नहीं जानते कि प्रार्थना किस रीति से करना चाहिए परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर–भर कर, जो ब्यान से बाहर है, हमारे लिए विनती करता है।" इसके अलावा पवित्र आत्मा रहस्यमय है, "हवा जिधर चाहती है उधर चलती है; और हम उसका शब्द सुनते है, परन्तु नहीं जानते कि वह कहाँ से आती है और कहाँ को जाती है?" (यूहन्ना 3:8)। पवित्र आत्मा की प्रवृति का अध्ययन करने व उसे समझने के बाद, हम परमेश्वर व हमें सशक्त बनाने के उसके तरीकों को समझ पाते हैं। पवित्र आत्मा के बारे में

अधिक जानने के लिए आज कुछ वचनों को पढ़े। पढ़ने के लिए कुछ पाठ निम्नलिखित हैं : रोमियों 8, प्रेरितों 2 और 1 कुरिन्थियों अध्याय 2

पवित्र आत्मा के बारे में सही समझ प्राप्त करने के बाद, हमें अपने जीवन में पवित्र आत्मा के प्रभाव को बढ़ने देना होगा। इसके लिए हमें धर्मशास्त्र पढ़ना व प्रार्थना करने के लिए समय अलग करना होगा। बाइबल पढ़ते समय, नयी बातों को प्रगट करने व मार्गदर्शन करने के लिए पवित्र आत्मा पर भरोसा करें। यूहन्ना 14:26 में लिखा है, "परन्तु सहायक अर्थात पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैंने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा।" बाइबल पढ़ते समय हमें पवित्र आत्मा से सीखने तथा सुनने की शक्ति व इच्छा प्राप्त करने में सहायता माँगनी है।

इसी तरह, प्रार्थना करते समय भी हमें पवित्र आत्मा से अगुवाई व मार्गदर्शन करने में सहायता मांगनी चाहिए। हम जान लें कि प्रार्थना का अर्थ एक तरफा संवाद नहीं है, अर्थात परमेश्वर को केवल अपनी इच्छा से अवगत कराना नहीं है। हमें प्रार्थना के दौरान, परमेश्वर की स्तुति, उसके कामों के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करने, अपनी इच्छाओं को परमेश्वर को सौंपने, तथा उसकी आत्मा की अगुवाई मांगने में निवेश करना है। प्रार्थना के समय में कुछ समय शान्त रहना भी अच्छा है ताकि आप परमेश्वर द्वारा वचन से सिखाई जाने वाली बात पर मनन कर सकें। हो सकता है परमेश्वर इस समय में आपको कुछ नया सिखाएं, पापों से निरूत्तर करें या कुछ ऐसे काम आपसे करवाए जिसके बारे में आपने कभी विचार तक न किया हों। एक महत्वपूर्ण बात यह है कि, जब भी पवित्र आत्मा हमें कोई शिक्षा देता है वह बात निश्चित तौर पर वचन से संगत होती है, जिससे हम पवित्र आत्मा की वाणी व कामों को लेकर कभी दुविधा में नहीं पड़ते।

प्रार्थना के लिए प्रतिदिन एक नियुक्त या सीमित समय होना ज़रूरी नहीं है। हम कहीं भी और कभी भी प्रार्थना कर सकते हैं। पूरे दिन में कभी भी परमेश्वर पर ध्यान लगाते व प्रार्थना करते समय, पवित्र आत्मा को हमें शिक्षा देते, सहायता करते, दूसरों के लिए बिचवई की प्रार्थना में अगुवाई करते, तथा कोई कदम उठाने में सहायता करते देख सकते हैं। इसके अलावा, संकट के समय में, हम रूककर पवित्र आत्मा से हमारी अगुवाई और उससे सहायता करने के लिए कह सकते हैं। जब हम अधिकाई से पवित्र आत्मा द्वारा परमेश्वर की अगुवाई को स्वीकार करने लगते हैं, तो न सिर्फ हमारे सामने पवित्र आत्मा की शिक्षाएं स्पष्ट होती हैं, वरन् हमें परमेश्वर की आज्ञा मानने तथा हमारे जीवन में पापों से बचने की शक्ति मिलती हैं।

हमारे भीतर वास करने वाले पवित्र आत्मा की बात मानने, समझने तथा उसकी शिक्षाओं के अनुसार अपने जीवन को ढालने से हम संसार में परमेश्वर के बेहतर गवाह बन सकते हैं। जैसे ही पवित्र आत्मा हमारे जीवन पर अधिकार करता है, हम परमेश्वर की इच्छानुसार जीवन व्यतीत करने की शक्ति पा लेते हैं। प्रेरितों

प्रार्थना के लिए प्रतिदिन एक नियुक्त या सीमित समय होना जरूरी नहीं है। हम किसी भी समय और कहीं भी प्रार्थना कर सकते हैं।

बाइबल प्रतिज्ञा करती है कि पवित्र आत्मा के प्रति समर्पित होने से आन्तरिक प्रतिफल प्राप्त होता है। गलातियों 5:22–23 में लिखा है, "पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, और कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम हैं; ऐसे ऐसे कामों के विरोध में कोई व्यवस्था नहीं।" जब हम परमेश्वर के नज़दीक बने रहेंगे, तो पवित्र आत्मा हमारे जीवन में इन फलों को उत्पन्न करेगा।

के काम 1:8 में लिखा है, "परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे, और .....सारे जगत में मेरे गवाह ठहरोगे।" पवित्र आत्मा की सहायता से धीरे–धीरे हम देख पाएंगे कि हमारी इच्छाएं, परमेश्वर की योजनाओं से मेल खाने लगेंगी। त्रिएकता का तीसरा व्यक्तित्व, अर्थात पवित्र आत्मा, विश्वास और धार्मिकता की यात्रा में लगातार अपनी सलाह व सहायता के द्वारा हमारी अगुवाई करता रहेगा।

सुर्खियां

- एक मसीही व्यक्ति के लिए अपनी ताकत पर जीवन व्यतीत करना असम्भव है। पवित्र आत्मा और हमारे पापमय स्वभाव में सदैव संघर्ष जारी रहता है। यह संघर्ष हमारे स्वर्ग कूच करने तक भी जारी रहेगा। जबकि, पवित्र आत्मा के अधीन होकर, परमेश्वर की सहायता से यह युद्ध हमारे लिए अधिक विजयी हो जाता है।

- यीशु ने अपने चेलों से वायदा किया कि, यीशु पर विश्वास करने वालों पर पवित्र आत्मा उतरेगा और वे जगत के छोर तक परमेश्वर के गवाह ठहरेंगे। यह वायदा आगे कहता है कि परमेश्वर का प्रेम और दया हम से कभी दूर नहीं होंगे।

- पवित्र आत्मा को बेहतर ढ़ग से समझने तथा सावधानी से वचन पढ़ने व प्रार्थना करने के द्वारा हम अपने जीवन में पवित्र आत्मा के प्रभाव को बढ़ा सकते हैं।

- हमें ज़्यादा से ज़्यादा प्रार्थना करने तथा आत्मा के लिए उपलब्ध होने की आवश्यकता है, जो हमें सिखाएगा, निरूत्तर व हमारी सहायता करेगा।

अब आप बताएं

- कौन सी ऐसी बुरी आदतें हैं जिन्हें आप चाह कर भी छोड़ नहीं पाते हैं? क्या आप उन्हें पवित्र आत्मा को सोंपने के लिए तैयार हैं?

- क्या आपको कोई क्षण या कोई क्षेत्र याद है जब आपने–अपने जीवन में पवित्र आत्मा को नियंत्रण सौंपा हों? परिस्थितियों में क्या बदलाव आया? आपने जीवन में क्या परिवर्तित हुआ?

- क्या आप परमेश्वर के साथ संगति व प्रार्थना के द्वारा रिश्ता बनाने की कोशिश कर रहे हैं? यदि हाँ, इससे आपके जीवन में क्या प्रभाव पड़ा?

- पवित्र आत्मा, सर्वशक्तिमान परमेश्वर का आपके जीवन में वास करना क्या मायने रखता है? क्या इसके द्वारा आपका चीज़ों को देखने का दृष्टिकोण नया हो गया है? यदि हाँ, क्या बदला है?

बाइबल के हवालों को पवित्र बाइबल, बाइबल सोसाइटी ऑफ इण्डिया (बी.एस. आई.) से लिया गया है। इन हवालों को प्रकाशित करने की अनुमति ली गयी है। इसके सारे अधिकार आरक्षित हैं।

अन्य सभी सामग्री © 2019 ट्रांस वर्ल्ड रेडियो कनाडा है, और इसका उपयोग किसी भी तरह से किया जा सकता है, जब तक आप इसका उपयोग मसीह के लिए दुनिया तक पहुंचने के उद्देश्य से करते हैं और सामग्री के उपयोग के लिए शुल्क नहीं लेते हैं। अधिक लाइसेंस विवरण देखें: www.discipleshipessentials.org/licensing